International Peer-Reviewed Referred Journal

Ayudh

ISSN : 2321 : 2160
Impact Factor : 5.1
Vol-3
August - 2023
99th Issue

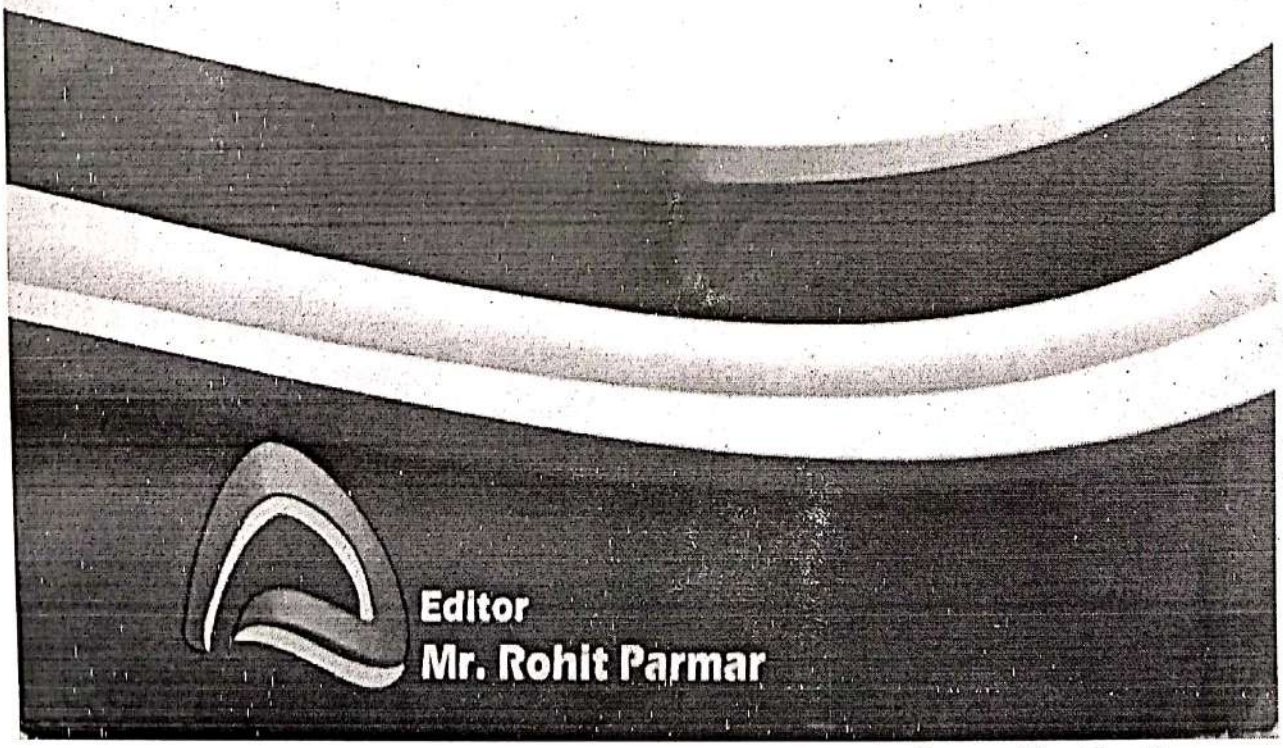

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Index

1. Research Methodology in Social Science: A Comprehensive Review and Analysis
Dr. Bhanukumar M. Parmar.....1

2. समयसामयिकता और यशोधरा
डॉ. आशा सी. पटेल.....9

3. વસિષ્ઠ ઋષિ અને તૃત્સુઓ ઉપર એક અધ્યયન (ઋગ્વેદ મંડળ 7ના અનુસંધાનમાં)
મહેશભાઈ ગોરધનભાઈ પરમાર.....11

4. ભારતમાં આવક અસમાનતાનો વિશ્લેષણાત્મક અભ્યાસ
Bhavesh R. Rathod.....16

5. આધુનિક તકનિકીનો શિક્ષણમાં ઉપયોગ
અનિલભાઈ બચુભાઈ પટેલ & ડૉ. ભાવિનાબેન આર. દેસાઈ.....21

6. શાળા કક્ષાએ વિદ્યાર્થીઓમાં મૂલ્યજાગૃતિ માટે શિક્ષકની ભૂમિકા
જાગૃતિબહેન એચ. ટંડેલ & ડૉ. રાજેન્દ્ર બી. પટેલ.....26

7. Breaking Boundaries and Unveiling Realities: Ismat Chughtai's 'Lihaaf' as a Lens to Women's Experiences in the Partition of India
Mr. Nimesh B. Patel & Dr. Snehal Vaghela.....30

8. ઉમરગામની ઉચ્ચ પ્રાથમિક શાળામાં અમલમાં આવેલ જ્ઞાનકુંજ કાર્યક્રમની અસરકારકતાનો અભ્યાસ
Vipul N. Patel & Dr. Naynaben Chauhan.....37

9. વર્તમાન શિક્ષણના પડકારો
સંજયભાઈ સી. પટેલ & ડૉ. નયનાબેન ચૌહાણ.....40

10. આદિવાસી સમાજમાં પરિવર્તન
Dr. Satish R. Amaliyar.....42

11. An effect of Anapana Sadhna on exam anxiety of students of 12th board
Dr. Riddhi B. Langavadara.....46

12. ગુજરાતમા જ્ઞાતિના અભ્યાસો એક અવલોકન
મયુરી જીવરાજભાઈ વધેરા.....48

13. Achievement Motivation and Stress Among the East and West Ahmedabad School Students
Dr. Sujata Barot.....52

Scanned with CamScanner

14. Effect of Frustration and Gender on Academic Achievement of Higher Secondary School Students
Dr. Mitesh Chaudhari.....57

15. દેશી રજવાડા પાલનપુર અને રાધનપુરમાં નવાબો ના સમયમાં શિક્ષણ : ઐતિહાસિક પરિપેક્ષ્યમાં
ડૉ. બુરહાના મલેક.....64

16. The impact of E-commerce on supply chain management
Dr. Hiral N. Thakkar.....70

17. Total Quality Management
Dr. Maunali V. Purohit.....75

18. પ્લેટોની ક્લારચના
મુકેશભાઈ પાહુજ્યાભાઈ ચૌધરી.....80

19. मार्कण्डेय पुराण में त्रिगुणात्मिका प्रकृतिका दार्शनिक स्वरुप
नाथाभाई डी. मछार.....82

20. Unveiling Profitability Patterns & Dynamics in Sabarkantha Central Cooperative Bank: An Empirical Investigation and Model Identification
Prachi Bhammarsinh Rathod & Dr. Preeti Mishra.....85

21. ભારતમાં ખેતમજૂરોના પ્રશ્નો અને તેના ઉકેલો
કુ. આરતીબેન માધુભા પિંગળ.....96

22. તાપી જિલ્લામાં સખીમંડળ સાથે જોડાયેલ સ્ત્રીઓનું શિક્ષણ અને વ્યવસાય
રીનાબેન હરીશભાઈ ગામીત.....100

23. "The Glass Palace" as a historical novel
Harishbhai Arjunbhai Gamit.....105

24. कबीर का औपनिषदमूलक रहस्यवाद : एक अध्ययन
डॉ. पी. एल. वाला.....111

25. કોલચા જાતિની વર્તમાન સામાજિક-આર્થિક સ્થિતિ
રમેશભાઈ ચેંદરભાઈ જાદવ.....114

Scanned with CamScanner

मार्कण्डेय पुराण में त्रिगुणात्मिका प्रकृतिका दार्शनिक स्वरुप

नाथाभाई डी. मछार
आसि.प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एन. एस. पटेल आर्ट्स (ऑटोनोमस) कोलेज, आणद

भूमिका -

संस्कृत साहित्य में वेद ,शास्त्र, इतिहास आदि में पुराणका विशेष महत्व है | पुराण भारतीय संस्कृतिका एक मात्र मेरुदण्ड है | अर्थात् वह आधारपीठ है जिस पर आधुनिक भारतीय अपनी स्थितिको प्रतिष्ठित करता है | इसके साथ साथ भारतीय संस्कृति के वास्तविक स्वरूप के ज्ञानार्थ भी पुराणकी जानकारी अति आवश्यक है | पुराण वांग्मय वस्तुतः प्राचीनताका द्योतक है | यह प्राचीन साहित्य होने के बावजूद अपने पत्येक ग्रन्थ में वर्तमान समाजको समेटे रहने की अलौकिक क्षमता शक्ति पुराणकी मुख्य विशेषता है | मनुष्य के लिए मनोहारी ,रूचि जागृत करने के साथ साथ उस कालकी प्रचलित कलाओ, ज्ञान विद्याओ को स्वयं में संगृहीत किया है | सम्पूर्ण जगत में सृष्टि काल से विकास प्रक्रिया विषयक ज्ञानका प्रकाशन जितने रहस्यमय ढंगसे पुराणोंने किया है इसकी तुलना में कोईभी ग्रन्थ अथवा वैदिक साहित्य में विस्तृत अथवा सम्पूर्ण विद्याओ को प्रभावित करके इतने प्रभावशाली ढंगसे ज्ञानका प्रकाश नही हुवा है | विस्तृत और जटिल होने के बावजूद पुराण अन्य विद्याओ के विवादों से बचकर क्षणभंगुर विषयक अपनी बात अति सरल , सुगम्य भाषा शैलीमें जनमानस तक पहुचाने का प्रयत्न किया है | अपने ज्ञानसे प्रभावसे ही पुराण जनसाधारण के ह्रदय में पारलौकिक संसारका ज्ञान देने तथा दैविक शक्तिओ प्रति आस्था जागृत करने में सदैव पयत्नशील है |

त्रिगुणात्मिका प्रकृतिका दार्शनिक स्वरूप –

दर्शनके विवेचित विषयों में प्रकृति अपना प्रमुख स्थान रखती है | श्रुति , स्मृति , पुराण इतिहासादि शास्त्रों ने इसे ही माया, मूलप्रकृति , महामाया , योगमाया आदि नामो से अभिहित किया है | यही प्रकृति अद्वैतवेदांतमें मायारूपमें वर्णित है | सांख्यमे अव्यक्त और प्रधान , प्रकृति की ही अपर संज्ञाए है | सम्पूर्ण जड़ जगत का मूलकारण प्रकृति ही है,समस्त जगतका कारण भूत तत्त्व होनेके कारण इसे 'प्रधान ' कहा जाता है | इसमें समस्त कार्यजगत अव्यक्त रूपसे विद्यमान रहते है | अतः इसे 'अव्यक्त ' कहा जाता है | प्रकृतिकी दो अवस्थाए होती है यथा व्यक्त (साम्यावस्था) और अव्यक्त (विकृतावस्था) इन्हें क्रमशः कार्य और कारण भी कहते है उसका व्यक्त स्वरूप सम्पूर्ण पंचात्मक जगत है | उनमे से सम्पूर्ण जगत उद्भूत होता है तथा जिसमे विलीन हो जाता है | वह उसका अव्यक्त स्वरूप है | यह प्रकृति सूक्ष्म अथवा इन्द्रियातीत और नित्य है यह सदसदात्मक है

मायातुप्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम् |- श्वेता .४.१०

गुण के बारे में सांख्यकारिका में बताया है की

प्रीत्यप्रीतिविषादत्मकाः प्रकाशप्रवृतिनियमर्थाः |
अन्योन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः ||- सा .का .१२
सत्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः |
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः || - सा .का .१३

सांख्य में सृष्टि प्रक्रिया बताय है जेसे –

प्रकृतेर्महान् ततो अहङ्कारः तस्मात् गणच्च षोडशकः |
तस्मादपि शोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि || -सा .का .२२

महातत्व से प्रारंभ कर विशेष पर्यंत सभी मूल भौतिक प्रपंच इसीमें विराजमान है | इसमें जीवन के षड्संख्या के श्रोत प्रवाहित होते रहते है इसका अधिष्ठाता पुरुष है | प्रकृति त्रिगुणात्मिका है |

''सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः – साङ्ख्यसूत्र .१ /६४

Scanned with CamScanner

सत्त्व , रजस , और तमस तीनो गुणोकी साम्यावस्था ही प्रकृति है | इस स्थितिमे कोई भी गुण किसीसे विशिष्ट नही होता विशेष के अभावमे सृष्टि भी होना असंभव है | साम्यावस्था वाली इस प्रकृतिमे गुण वैषम्य होने पर ही सृष्टि सम्पन्न होती है | सर्ग के समय सम्पूर्ण जड़ जगत प्रकृतिके गर्भ से कार्यरूप में अभिव्यक्त होता है तथा प्रलय के समय पुन: प्रकृति के गर्भ में विलीन हो जाता है अतः त्रिगुणात्मिका प्रकृति ही समस्त जगत का कारण है |

विष्णु की माया स्वरूपा प्रकृति ही जगत की जननी एवं सम्पूर्ण चराचर जगत की इश्वरी है | पृथ्वी ,जल ,सम्पूर्ण विद्याए और समस्त स्त्रिया उन्हीकी रूप है | इस प्रकार तीनो लोको के सभी पदार्थ चाहे वे नित्य हो या अनित्य, स्थूल हो या सूक्ष्मादि सूक्ष्म ,मृत हो या अमूर्त उन सभीका आश्रय प्रकृति ही है | प्रकृति के कार्यो से ही उसकी जगत कारणता का अनुमान किया जाता है | क्योकि कारण के ही गुण कार्यमें अनुगत रहते है | कारणकी व्यक्तावस्था को कार्य कहते है सुख दु :ख मोहात्मक यह पञ्च भौतिक जगत प्रकृति का कार्य है | त्रिगुणात्मिका प्रकृति इस जगत का मूल कारण है | शंकराचार्य भी अव्यक्त नामवाली त्रिगुणात्मिका प्रकृतिको ही जगत का मूल कारण स्वीकार किए है इसी से उत्पन्न कार्य रूप जगत को देखकर ही उसकी सिद्धि होती है | श्रीमद भागवतमहापुराण मे भी त्रिगुणात्मिका प्रकृति को ही जगत का मूल कारण स्वीकार किया गया है |

पुरुषाधिष्ठितं नित्यमनित्यमिव च स्थिरम् |
तत् श्रूयताम् महाभाग परमेण समाधिना ||मार्क -४२ .३१
गुणभावात्सृज्यमानात्सर्ग कालेतत: पुन: |
प्रधानं तत्त्वमुद्भूतं महान्तं तत्सगावृणोत् ||-मार्क . ४२ /३६

सांख्य दर्शन में निम्नलिखित पांच युक्तियो द्वारा प्रकृतिकी कारणता सिद्ध की है | इस जगतके सम्पूर्ण पदार्थ सीमित ,परिमित , अव्यापक , अनित्य तथा अनेक है | सीमित वास्तु के लिए असीमित का ही आधार अपेक्षित है | सीमित का आधार कभी सीमित नही हो शकता अतः जगत के समस्त पदार्थो का मूल कारण अवश्य ही असीमित , अपरिमित ,व्यापक ,नित्य ,और एक होना साहिए यह कारण प्रकृति है |

इस जगत के सब पदार्थ सुख दु :ख मोहात्मक है अतः जगत के पदार्थो की उत्पति का एक एसा मूल कारण होना साहिए, जिसमे उक्त विशेषताए उपलब्ध हो ये विशेषताए त्रिगुणात्मिका प्रकृति मे वद्यमान है | अतः प्रकृति ही जगतका मूल कारण है | समस्त कार्य कारण की शक्ति से उत्पन्न होते है | अतः शक्तिपुंज प्रकृति ही जगत का मूल कारण है | व्यक्तावस्था में कार्य कारण से विश्राम या भेद अनुभव सिद्ध है , यह विभाग सिद्ध करता है की अव्यक्त कारण प्रकृति है | अवयक्त अवस्था में समस्त कार्य बीज रूप से अपने कारण में विलीन हो जाते है अथवा जगत के समस्त पदार्थो में सवरूपगत एकता है ,वैश्वरूप्य है ,और यह एकता मूल कारण से आती है |

भेदानां परिमाणात् समन्वयात् शक्ति: प्रवृतेश्च |
कारण कार्य विभगाद् विभागादैश्य रूप्यस्य || .साङ्ख्यकारिका .१५
त्रिगुणंविवेकि विषय: सामान्यं चेतनं प्रसवधर्मि |
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ||-सा .का .११

सांख्यकारिका में प्रकृति को अहेतुक ,व्यापक , निष्क्रिय , नित्य , एक , निराश्रित, लिंगरहित , सवयव , स्वतंत्र , त्रिगुणात्मक, विवेकरहित, विषयरूपा, सामान्य अचेतन तथा प्रसवधर्मिणी कहा गया है | सांख्य के इस मूल प्रकृतिको कोई अन्य कारण नहीं है ,यदि किसी तत्त्वको इसका भी कारण माना जायेगा , अतः सांख्याचार्योने इसे मूल पृकृति माना है, पुरुष द्वारा सुभित होने पर सम्पूर्ण प्रपंन्चात्मक जगत इसी से कार्य रूप मे अभिव्यक्त होता है |

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम् |
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम् || - साङ्ख्यकारिका .१०

मारकंडेयमहापुराणमें वर्णित 'माया' या 'प्रकृति' परब्रह्म परमात्मा की शक्ति है यह शक्ति स्वरूपा प्रकृति परमात्मा से भिन्न न होकर अभिन्न है | यह संपूर्ण जगत उसी शक्तिका लीला विलास है | उसी शक्ति द्वारा जगतकी उत्पति , स्थिति और लयादी रूप व्यापार सम्पन्न होते है | प्रकृति बंधन और मोक्षका कारण भी है |

Scanned with CamScanner

मायाप्रकृति द्वारा सम्पूर्ण संसार मोहमत में निमग्न है | इस संसार के सभी प्राणी चाहे वह ज्ञानी मनुष्य हो अथवा पशु -पक्षी मृगादी सभी महामाया के प्रभावसे ममता के आवर्त वाले मोहसागर के गर्त में गिराये जाते रहे है | यह वैष्णवी माया पर्मैश्वर्यशालिनी है यह बड़े बड़े ब्रह्मज्ञानियो के भी चित्तको बलपूर्वक अपनी और खींच लेती है , और उन्हें मोहममता के वशीभूत बना देती है | इस प्रकार सृष्टिकाल से ही इस संसारके सभी प्राणी महामाया के प्रभावसे मोहित थे ,मोहित है ,और प्रलयपर्यंत मोहित होते रहेंगे ,यही प्रकृति विद्यारुपसे मोहममताका उच्छेद कर मोक्ष प्रदान करती है अतः इसे मोक्षदायिनी कहा जाता है |

प्रकृति जिन द्रव्यों का समूह रूप स्वयं होती है संख्यामे तिन होते है ,सत्व, रजस् तथा तम | इन तिनोका सामान्य नाम है गुण | वैशेषिक दर्शन मे रूप , रस , गंध आदि द्रव्य में रहने वाले पदार्थो को गुण शब्दसे पुकारते है परन्तु सांख्य दर्शन में ये तीनो गुण इस रीतीसे गुण नही है बल्कि द्रव्य रूप है ये वे तत्त्व होते है जिनसे प्रकृति का निर्माण होता है | ये प्रकृति के संघटक तत्त्व है | सांख्य दर्शन प्रकाश तत्त्व , चलत्व, लघुत्व ,गुरुत्व आदि इन गुणों के गुण माने गए है ,पुराणों से भी इनकी पुष्टि होती है अतः स्पष्ट है की ये गुण द्रव्य रूप है |

उपसंहार –

भारतीय दार्शनिक परंपराओ के प्रकाशमें मारकंडेय पुराण के भी चिन्तनका मुख्य विषय जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्षकी संप्राप्ति कराना है , जिस मुख्या तत्त्व से समस्त प्राणियो का उद्भव होता है एवं जिसमे वो विलीन हो जाते है उस तत्व का ज्ञान एवं साधना द्वारा उपलब्धि ही उसका मुख्या ध्येय है इसका चिंतन क्षेत्र इतना उदार एवं उदात्त है की मात्र हिन्दू सम्प्रदायों के प्रति ही नहीं जैन ,बौद्ध धर्मो के प्रति भी भेदभाव परक धारणा से विलग रखता है | मारकंडेयपुराण में वेदांत ,योग , एवं सांख्य दर्शन अपने पूर्ण परिपाक के सहित परिवर्णित है |

सन्दर्भग्रन्थसूची-

१) मारकंडेयपुराण – क्षेमराज श्रीकृष्ण दास ,बम्बई -१९०७

२) सांख्यकारिका – डॉ .राकेश शास्त्री ,परिमल पब्लिकेशन दिल्ही -प्रथम संस्करण –१९९८

Scanned with CamScanner